NAVBHARAT TIMES (25-11-2009)

आतंकी मंसूबों से नहीं डरते बच्चों के बड़े सपने

अमित कुश ॥ नई दिल्ली

श्रीनगर के लिंटन हॉल स्कूल में तीसरी क्लास में पढ़ने वाली आयशा फारूक अपनी बातें खूब हंसते हुए बताती है। उसने बताया कि दिल्ली में उसे कुतुब मीनार बहुत अच्छी लगी और शाहिद कपूर और रानी मुखर्जी उसके फेवरिट हैं। उसकी खिलखिलाहट के सामने दुनिया की सारी मासूमियत फीकी लग रही थी, लेकिन ये बातें शुरू करने से पहले आयशा के मामा ने सख्त हिदायत दी थी कि उसके पापा के बारे में कुछ न पूछें, नहीं तो नन्ही आंखों से आंसुओं को रोकना मुश्किल हो जाएगा।

आठ साल की आयशा के पापा को आतंकवादियों ने तब मार डाला था, जब वह सिर्फ चार साल की थी। 29 दिसंबर 2004 को नरवारा, श्रीनगर में हुई ऐसी घटनाओं ने कई बच्चों की जिंदगी आयशा जैसी बना दी है। वे बच्चे, जिनकी जिंदगी आतंकवादी घटनाओं की परछाई से स्याह हो चुकी थी, उन्हें उजाला दे रहा है 'नैशनल फाउंडेशन फॉर कम्युनल हार्मनी'। एनएफसीएच के 'कम्युनल हार्मनी कैंपेन वीक' पर आयशा समेत ऐसे पांच बच्चे इन दिनों दिल्ली में हैं। ये हैं - खालिद बशीर (14 साल, क्लास 9, जम्मू-कश्मीर), असम से आए भाई-बहन पबित्रा (10, क्लास 4) व रूपामोनी भाराली (15, क्लास 10) और मणिपुर की एन. जी. जंगडेईखिन (15, क्लास 11)। खालिद के पिता 1999 में आतंकियों के हाथों मारे गए थे। उसकी मां, वह और उसके तीन भाई-बहन फाउंडेशन की मदद से जीवन चलाते हैं। पबित्रा और रूपामोनी के पिता 1999 में हुए आतंकवादी हमले में विकलांग हो गए थे, जिससे वह अब रोजी-रोटी नहीं कमा सकते। एनजी के पिता भी 95 में इम्फाल में हुए एक आतंकी हमले में मारे गए थे। मंगलवार को 'टाइम्स फाउंडेशन' ने इन पांचों बच्चों के साथ एक इंटरेक्शन प्रोग्राम आयोजित किया। सभी ने दिल्ली के अपने अनुभव, अपनी पसंद और इच्छाओं के बारे में बताया। पता चला कि आतंक इनके सपनों को मार नहीं सका है। आयशा मेडिकल साइंटिस्ट बनना चाहती है, तो खालिद पैसा कमाकर जरूरतमंदों की मदद करना चाहता है। दोनों को पता है कि इसके लिए खूब मेहनत करनी होगी। पबित्रा के संकोची स्वभाव ने उसे कुछ बोलने नहीं दिया, लेकिन उसकी बहन को पता है कि उसे टीचर ही बनना है। एनजी का सपना है कि वह सिविल सर्विसेज में जाकर देश की सेवा करे। सभी दिल्ली पहली बार आए हैं और साथ रहना व घूमना उन्हें खूब भा रहा है। अभी तक वे कुतुब मीनार और कई गार्डन घूम चुके हैं।

एनएफसीएच 19 फरवरी 1992 को स्थापित केंद्र सरकार का स्वायत्तशासी संगठन है। यह ऐसे बच्चों का मददगार है, जिनका परिवार आतंकवादी घटनाओं से प्रभावित हुआ है। केंद्रीय गृह मंत्री इसके अध्यक्ष होते हैं। 18 साल तक के बच्चों को सालाना स्कॉलरशिप दी जाती है और उनकी देखभाल के लिए राज्य सरकार व जिला प्रशासन से बात की जाती है। यह संगठन हर साल 19 से 25 नवंबर तक 'कम्युनल हार्मनी कैंपेन वीक' का आयोजन करता है, जिसके आखिरी वर्किंग-डे को 'फ्लैग-डे' के रूप में मनाया जाता है। जिसमें ये बच्चे प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति जैसी हस्तियों को फ्लैग भेंट करते हैं।

Naresh Sharma

नैशनल फाउंडेशन फॉर कम्युनल हार्मनी के 'कम्युनल हार्मनी कैंपेन वीक' पर आतंकवाद प्रभावित पांच बच्चे इन दिनों दिल्ली में हैं।

The Times of India (Student Edition) 08-01-2010

Delhi musings

Delhi, a city of Djinns, has a culture of its own. Here, three kids, amongst those who came to the Times Foundation, share their Delhi experience...

UNFORGETTABLE DAYS IN DELHI

At first when I received information of the Delhi tour, I was not willing to go as it would have affected my studies adversely but after coming here, I realised how wrong it would have been for me to miss such an opportunity. I know now that the tour has increased my general knowledge as well as improved my vision of the people living in other Indian states. I would want to go on more such expeditions.

I exchanged my thoughts and my small experiences of life with the other people I met during this tour and got to know about their way of life, food habits, dresses and so on. I was surprised to see their love and affection for me, despite the fact that we could not converse in Hindi.

We exchanged our thoughts, played and ate meals together. It seemed to me as if I was at my home with my family members. The authority which conducted our tour too had shown their affection, love and hospitality which will remain embedded in my mind throughout my life. They showed us different monuments like Qutb Minar, Red Fort, Lodi Garden, Lotus Temple etc. I got a peek into India's glorious past after visiting these historical sites. After this tour, I realised that a bunch of colourful flowers look good in a vase, more than a bunch of single coloured flowers.

In future, I would want to become a scientist to serve the human beings.

Aisha Farooq, class III,
Linton Hall School, Srinagar

> "I was wowed by the monumental sites of Delhi like Jama Masjid, India Gate and Red Fort. The day I met the Vice-President of India was the best day of my life"
>
> **Khalid Bashir, class IX,**
> **Sheikhul Alam Model High School, Srinagar**

MY FIRST VISIT TO DELHI

The district administration, Senapati, Manipur had chosen me for a visit to Delhi and this was my first chance to be aboard a plane. Once in New Delhi, we got the opportunity to go sightseeing and visit places like Qutb Minar, Garden of Five Senses, Lotus Temple and Lodi Garden. It was very exciting as we had only read about them in our books. Then we met Mrs Usha Kumar, an advocate in the Delhi High Court and Secretary, Anjuman Sair-E-Gul Farosham. I regarded her as my grandma and I will always cherish her valuable words.

Then I was taken to the office of NFCH (National Foundation for Communal Harmony) to practise for the Flag Day (25th Nov). After the untimely demise of my father, it was only due to help from NFCH that I was able to study. After this, we headed to the Times House and got a chance to interact with the officials there. Every moment was a splendid moment which would not have been possible without NFCH. Then came the day we waited for with a bated breath. On the Flag Day we had the pleasure of meeting the Vice-President of India and then the Home Minister and Home Secretary. My thirst to learn more about my motherland and to be a good citizen has been implanted in me due to the assistance of NFCH. I am delighted to have visited Delhi and will remain thankful for all the good things bestowed upon me. Lastly, I resolve to spread the message of love and communal harmony in my motherland India!

NG Jangduchin, class XI, Elite Higher Secondary College, Senapati district, Manipur